DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia

B.A. (Hons.), part-III
Subject — Sanskrit
Paper — VII
Short Notes

5×4 = 20 Marks
Dated- 06.07.2020

अलंकारों के सोदाहरण लक्षण —

1. अनुप्रास अलंकार

काव्य सौन्दर्य की वृद्धि करनेवाले धर्म को अलंकार कहते हैं। इसके दो भेद कहे गये हैं — शब्दालंकार और अर्थालंकार। शब्दगत अलंकारों में अनुप्रास प्रथम अलंकार है।

अनुप्रास का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है — अनुगत: प्रासो न्यासोऽनुप्रास:। इसके प्रत्येक पदावयव का अर्थ होता है — अनुशब्दोऽनुगुणार्थ:, प्रशब्द: प्रकर्षार्थ: आशब्दो न्यासार्थ: इति। अर्थात् जहाँ रस के अनुकूल एक वर्ण का बार-बार (अनु) प्रकर्षरूप (प्र) से निबन्धन या न्यास (आस) हो, उसे अनुप्रास कहते हैं।

लक्षण — "अनुप्रास: शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।"
अर्थात् स्वरों की विषमता रहने पर भी शब्द अथवा व्यंजनवर्णों में सादृश्य की प्रतीति अनुप्रास नामक अलंकार है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित पद्य ~~श्लोक~~ द्रष्टव्य है —

"लताकुञ्जं गुञ्जन्मदवदलिपुञ्जं चपलयन् समालिङ्गन्नङ्गं
द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन्।
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन् रजोवृन्दं
विन्दन् किरति मकरन्दं दिशिदिशि॥"

यहाँ स्वरवर्णों की असमानता रहने पर भी 'ञ्जं' (कुञ्जं, गुञ्जं, पुञ्जं) 'ङ्गं' (समालिङ्गन्, अङ्गं, अनङ्गं) की आवृत्ति पायी जाती है, जो रसानुकूल है, अतएव यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

— 0 —